Mareez Tabeeb Ban Gayaa (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 228
Weekly Booklet : 228

अमीरे अहले सुन्नत की किताब ''नेकी की दा'वत'' की

एक क़िस्त मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

मरीज़ तबीब बन गया

सफ़हात 24

क़ब्र की रोशनी का सामान 02

अंगूर के हिसाबे आख़िरत का डर 08

माल ज़ियादा वबाल ज़ियादा 14

ज़ख़्मी दिल वाले बुज़ुर्ग 19

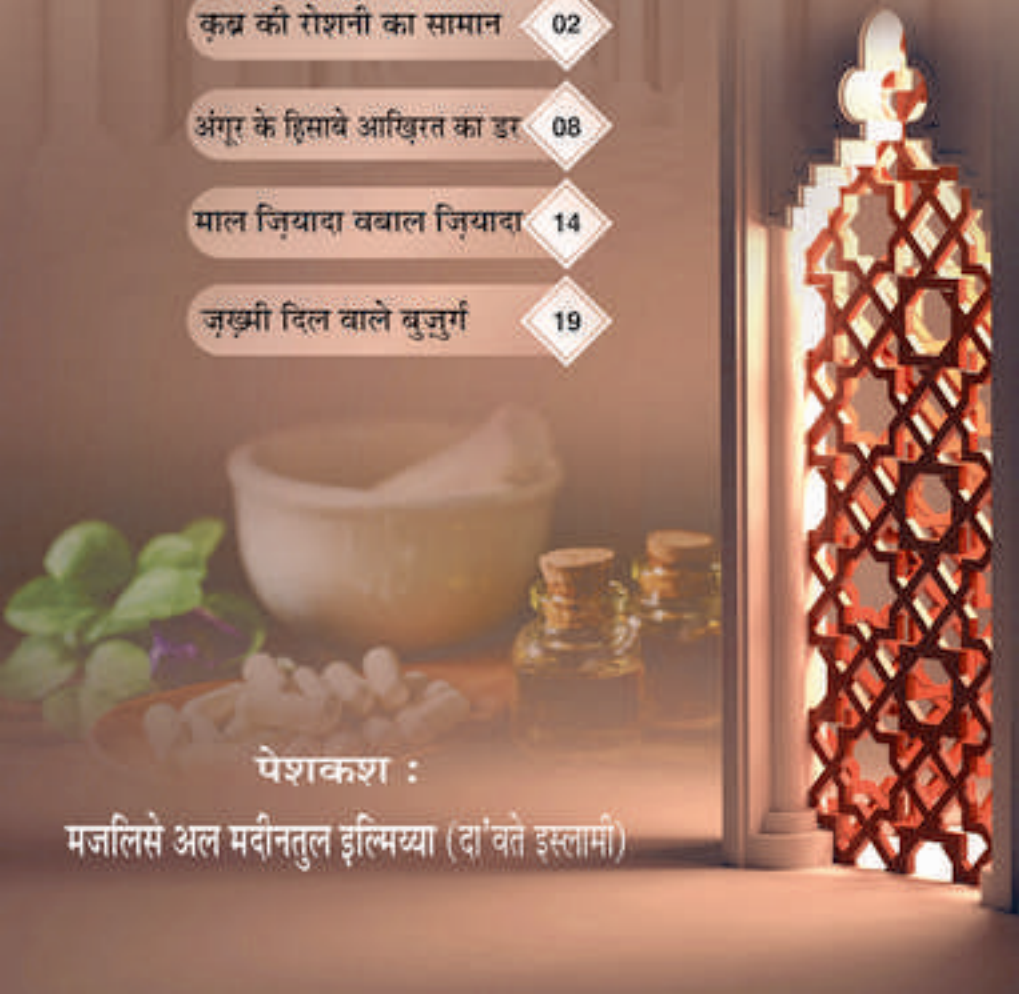

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **मरीज़ त़बीब बन गया**
सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

मरीज़ त़बीब बन गया

येह रिसाला (**मरीज़ त़बीब बन गया**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 9898 732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून ''नेकी की दा'वत'' के सफ़ह़ा 341 ता 357 से लिया गया है।

मरीज़ त़बीब बन गया

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़ह़ात का रिसाला ''**मरीज़ त़बीब बन गया**'' पढ़ या सुन ले, उसे गुनाहों की बिमारी से शिफ़ा दे, जहन्नम से बचा और जन्नतुल फिरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिसे कोई मुश्किल पेश आए उसे मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ना चाहिये क्यूं कि मुझ पर दुरूद पढ़ना मुसीबतों और बलाओं को टालने वाला है।

(القول البدیع، ص414-بستان الواعظین لابن جوزی، ص472)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नेकी की दा'वत देना ख़ामोश रहने से बेहतर है

ज़बान की आफ़तें बे शुमार हैं और इन से बचने का बेहतरीन त़रीक़ा येही है कि ज़बान पर क़ुफ़्ले मदीना लगा लिया जाए, या'नी आदमी ख़ामोशी की आ़दत बना ले, अलबत्ता जो ज़बान की लग़्ज़िशों से बचना जानता हो और शरीअ़त के ऐन तक़ाज़े के मुत़ाबिक़ बोलने पर क़ुदरत रखता हो उस के लिये नेकी की दा'वत देना ख़ामोशी से अफ़्ज़ल तरीन अ़मल है। जैसा कि ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : अगर तुम اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना) करो तो येह ख़ामोश रहने से ज़ियादा बेहतर है।

(شُعَبُ الْاِیمان ج٦ص٩٢ حدیث٧٥٧٨)

सवाब मिलने की उम्मीद

ह़ज़रते अबुद्दरदाअ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं दूसरों को नेकी का हुक्म देता हूं और ख़ुद अगर्चे वोह काम नहीं करता लेकिन फिर भी मुझे **अल्लाह** से अज्र मिलने की उम्मीद है। (کَنْزُ الْعُمّال ج٣ص٢٧٠ رقم٨٤٣٨) या'नी जब किसी को नेक काम करने का हुक्म दिया तो मुझे अज्र मिल गया अगर्चे मैं वोह काम ख़ुद न भी करता हूं।

क़ब्र की रोशनी का सामान

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई : "भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वह़शत न हो।"

(حِلْیَةُ الْاَولیاء ج٦ص٥رقم ٧٦٢٢)

मुबल्लिग़ीन की क़ब्रें اِنْ شَآءَاللّٰه जगमगाएंगी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से नेकी की बात सीखने सिखाने का अज्रो सवाब मा'लूम हुवा। सुन्नतों भरा बयान करने या दर्स देने और सुनने वालों के तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे, اِنْ شَآءَاللّٰه उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी क़िस्म का ख़ौफ़ महसूस नहीं होगा। इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए नेकी की दा'वत देने वालों, सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और

रोज़ाना अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर "नेक आ'माल" का रिसाला पुर करने की तरग़ीब देने वालों और सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश करने वालों नीज़ मुबल्लिग़ीन की नेकी की दा'वत सुनने वालों की क़ुबूर भी اِنْ شَآءَاللّٰه हुज़ूर मुफ़ीजुन्नूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े नूरुन अ़ला नूर होंगी।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 152)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : **त़ल्अ़त :** या'नी चेहरा। सूरत। नज़ारा

शर्ह़े कलामे रज़ा : ऐ आ़शिक़ाने रसूल! झूम उठो! जब मह़बूबे रब, ताजदारे अ़रब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना नूरानी चेहरा चमकाते हुए मोमिन की क़ब्र में जल्वा फ़रमा होंगे, तो रोशनी ही रोशनी हो जाएगी और ता क़ियामे क़ियामत क़ब्र में नूर के चश्मे लहराते रहेंगे।

अंधेरा घुप अंधेरा है शहा वह्शत का डेरा है
करम से क़ब्र में तुम आओगे तो रोशनी होगी

(वसाइले बख़्शिश, स. 280)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मरीज़ त़बीब बन गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه एक मरतबा बीमार हो गए। लोगों ने शिफ़ाख़ाने में दाख़िल करवा दिया। आप के अ़क़ीदत मन्द वज़ीर अ़ली बिन ईसा की दरख़्वास्त पर ख़लीफ़ए बग़दाद ने दरबारे शाही के नसरानी (क्रिस्चेन) रईसुल अत़िब्बा (या'नी डॉक्टरों के सरदार) को आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के इ़लाज के लिये भेज दिया। उस ने बड़ी तवज्जोह

से इलाज किया मगर कोई फ़ाएदा नहीं हुवा। एक दिन रईसुल अत़िब्बा ने कहा : ऐ शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ! अगर मुझे येह मा'लूम हो जाए कि मेरे बदन के किसी टुकड़े में आप का इलाज है तो मुझे आप के लिये अपना उ़ज़्व काट देने में भी कोई तरद्दुद (या'नी इन्कार) नहीं होगा। ह़ज़रते सय्यिदुना शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "मेरा इलाज आप के एक उ़ज़्व काटने के मुक़ाबले में बहुत ही आसान चीज़ में है।" उस ने पूछा : वोह क्या है ? फ़रमाया कि तुम अपना ज़ुन्नार काट डालो और इस्लाम क़बूल कर लो اِنْ شَآءَ الله मारे ख़ुशी के मेरा मरज़ जाता रहेगा। त़बीब ने फ़ौरन ज़ुन्नार काटा, कुफ़्र से तौबा की, कलिमा पढ़ा और मुसल्मान हो गया उसी वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तन्दुरुस्त हो कर बिस्तरे बीमारी से उठ खड़े हुए। ख़लीफ़ए बग़दाद को जब येह ख़बर पहुंची तो उस ने तअ़ज्जुब से कहा कि मैं ने तो त़बीब को मरीज़ के पास भेजा था, मुझे क्या ख़बर थी कि मरीज़ को त़बीब के पास भेज रहा हूं। (روح البیان، 2/461)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ज़ुन्नार किसे कहते हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक धागा या ज़न्जीर जो क्रिस्चेन, मजूसी (या'नी आतश परस्त) ग़ैर मुस्लिम और यहूदी अपनी कमर में बांधते हैं ज़ुन्नार कहलाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि हमारे औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم नेकी की दा'वत, ख़ल्क़े ख़ुदा की हिदायत और इस्लाम की इशाअ़त के निहायत ही शैदाई थे, किसी ग़ैर मुस्लिम के इस्लाम क़बूल कर लेने से उन्हें इतनी अ़ज़ीम मसर्रत ह़ासिल होती थी कि ख़ुशी के मारे बसा अवक़ात उन की ख़त़रनाक बीमारियां दूर हो जाती थीं।

मुझे तुम ऐसी दो हिम्मत आक़ा दूं सब को नेकी की दा'वत आक़ा
बना दो मुझ को भी नेक ख़स्लत नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

(वसाइले बख़्शिश, स. 191)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ख़लीफ़ा सुलैमान रो पड़ा

ख़लीफ़ए दिमश्क़ सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक उमवी बड़े करों फ़र (या'नी शानो शौकत) का बादशाह था। उस ने एक मरतबा मश्हूर मुह़द्दिस सय्यिदुना इमाम त़ाऊस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को दरबार में बुलाया, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मौक़अ़ पा कर "नेकी की दा'वत" देते हुए इस्तिफ़्सार फ़रमाया (या'नी पूछा) : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! क्या आप को मा'लूम है कि सब से ज़ियादा अ़ज़ाब किस को होगा ? ख़लीफ़ा ने कहा : आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ही इर्शाद फ़रमाइये ! तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने येह ह़दीसे पाक पढ़ कर सुनाई : "जिस को **अल्लाह** पाक ने अपनी सल्त़नत में बादशाही अ़त़ा फ़रमाई फिर उस ने ज़ुल्म किया तो उस शख़्स को क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा अ़ज़ाब दिया जाएगा।" येह सुन कर ख़लीफ़ा ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ उठा और दहाड़ें मार कर रोने लगा यहां तक कि रोते रोते तख़्त पर चित लेट गया। उस के तमाम दरबारी उस को इसी ह़ालत में छोड़ कर चले गए। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ١٦٩)

मा तह़्तों के बारे में सभी से पूछा जाएगा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि बयान की तासीर के लिये जहां सुनने वालों को दिलो दिमाग़ ह़ाज़िर रखते हुए सुनना ज़रूरी है वहां मुबल्लिग़ का भी बा अ़मल, इख़्लास का पैकर

और हर क़िस्म की हिर्स और ज़ाती ग़रज़ से पाक होना लाज़िमी है। जहां येह दोनों चीज़ें जम्अ़ होंगी, اِنْ شَآءَاللّٰه वहां बयान का ख़ूब असर ज़ाहिर होगा और अगर इन दोनों में से कोई एक चीज़ मफ़्क़ूद (या'नी ग़ाइब) होगी तो बयान के समरात (या'नी फ़वाइद) मिलना दुश्वार होंगे। इस हिकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि बादशाह अगर ज़ुल्म करेगा तो अ़ज़ाबे नार का सब से ज़ियादा ह़क़दार बनेगा। जो लोग इक़्तिदार के त़लब गार रहते हैं वोह एक त़रह़ से अपने आप को बहुत बड़े पुर ख़त़र ग़ार में धकेलने के दरपै होते हैं। इस ज़िम्न में दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों : (1) जिस को रिआ़या का ज़िम्मेदार बनाया गया फिर उस ने रिआ़या की ख़ैर ख़्वाही न की तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू तक न पा सकेगा। (بخاری ج ٤ ص ٤٥٦ حدیث ٧١٥٠) (2) तुम सब निगह्बान हो और हर एक से उस की रिआ़या (या'नी मा तह़्तों और मह़कूम लोगों) के बारे में पूछा जाएगा। जिसे लोगों पर अमीर बनाया गया वोह निगह्बान है, उस से उन के बारे में पूछा जाएगा। मर्द अपने अहले ख़ाना पर निगह्बान है, उस से अहले ख़ाना के बारे में सुवाल किया जाएगा, औ़रत अपने शौहर के घर और उस की औलाद पर निगह्बान है, वोह उन के बारे में जवाब देह होगी, ग़ुलाम अपने आक़ा के माल पर निगह्बान है, उस से इस बारे में पूछगछ होगी। सुन लो ! तुम में से हर एक निगह्बान है और हर एक से उस की रिआ़या (मा तह़्तों और मह़कूम लोगों) के बारे में पुरसिश (या'नी पूछगछ) होगी। (بخاری،2/159،حدیث:2554)

इक़्तिदार मिलने पर रोना

अब एक हिकायत मुलाह़ज़ा हो जो कि अरबाबे इक़्तिदार के लिये

निहायत इ़ब्रत ख़ेज़ है चुनान्चे तारीख़ुल ख़ुलफ़ा में है : अ़त़ा बिन अबी रबाह़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते उ़मर बिन अब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़ौजए मोह़तरमा फ़ात़िमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْها ने मुझ से फ़रमाया कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को ख़िलाफ़त तफ़्वीज़ की गई (या'नी मिली) तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه घर में आए और मुसल्ले पर बैठ कर गिर्या व ज़ारी करने लगे और इतना रोए कि दाढ़ी मुबारक आसूंओं से तर हो गई। मैं ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! आप क्यूं रो रहे हैं ? फ़रमाया : ऐ फ़ात़िमा ! मुसल्मानों की निगह दाश्त (या'नी निगरानी) और उन की फ़लाह़ व बहबूद (या'नी भलाई और ख़ैर ख़्वाही) का सारा बोझ मेरी गरदन पर डाल दिया गया है। मैं नंगे, भूकों, फ़क़ीरों, मरीज़ों, मज़्लूम क़ैदियों, मुसाफ़िरों, ज़ईफ़ों, बच्चों और इ़याल दारों (या'नी बाल बच्चे दारों) ग़रज़ कि अपनी रिआ़या के तमाम मुसीबत ज़दों की ख़बर गीरी के बारे में ग़ौर करता हूं और सोचता हूं कि कहीं इन में से किसी एक के बारे में भी **अल्लाह** पाक ने मुझ से बाज़पुर्स (या'नी पूछगछ) फ़रमा ली और मुझ से जवाब न बन पड़ा तो मेरा क्या बनेगा ! मैं इसी फ़िक्र में रो रहा हूं। (تاریخ الخلفاء ص ۱۸۹)

अंगूर खाने से भी ख़ौफ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! आज कल उ़मूमन इक़्तिदार के ज़रीए़ माल व मनाल (या'नी जाएदाद व माल) ह़ासिल किया जाता है मगर रब्बे करीम के नेक बन्दों का ह़ाल इस से मुख़्तलिफ़ होता है, ख़ौफ़े ख़ुदा से मालामाल होने के सबब वोह ऐसे मौक़अ़ पर रो रो कर निढाल हो जाते हैं। वोह ह़ज़रात फूंक फूंक कर क़दम रखते और बात बात पर डरते हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना औ़न बिन मुअ़म्मर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का

बयान है कि एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपनी ज़ौजए मोह़तरमा से फ़रमाने लगे : फ़ातिमा ! तुम्हारे पास एक दिरहम हो तो दे दो आज अंगूर खाने को जी चाहता है, उन्हों ने अ़र्ज़ की : मेरे पास दिरहम कहां ! क्या आप अमीरुल मुअमिनीन हो कर एक दिरहम की भी ह़ैसिय्यत नहीं रखते ? (बे क़रार हो कर) फ़रमाया : अंगूर न खाना इस से कहीं ज़ियादा आसान है कि कल मैं जहन्नम की ज़न्जीरें पहनूं। (تاریخ الخلفاء ص ٤٧١)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

अंगूर के ह़िसाबे आख़िरत का डर

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का ख़ौफ़े ख़ुदा मरह़बा ! अंगूर बेशक ह़लाल व त़य्यिब हैं लेकिन **अल्लाह** पाक की ने'मत हैं और बरोज़े क़ियामत हर ने'मत का ह़िसाब देना होगा, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ख़ौफ़े आख़िरत के सबब अंगूर खाने से बाज़ रहे। आह ! आज हम एक से एक लज़ीज़ ने'मतें खाते और बरतते (या'नी इस्ति'माल करते) हैं और मज़ीद बेहतर से बेहतरीन की जुस्तजू (या'नी तलाश) में रहते हैं, उ़म्दा से उ़म्दा तरीन कोठी भी नाकाफ़ी महसूस होती है, बड़े से बड़ा बंगला (VILLA) ह़ासिल करने के दरपै रहते हैं जब कि पारह 30 सूरतुत्तकासुर की आख़िरी आयत ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों को बे क़रार किये देती है। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़ह़ा 1118 पर इर्शाद होता है :

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴿۸﴾

(پ30، التکاثر:8)

तेरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी।

आयते मुबारका की तफ़्सीर में तीन अह़ादीस

﴿1﴾ इक्रिमा ने कहा : जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम कौन सी ने'मतों में हैं ! हमें तो जव की रोटी और वोह भी सिर्फ़ आधा पेट नसीब होती है ! वह़ी आई : क्या तुम जूते नहीं पहनते ? ठन्डा पानी नहीं पीते ? येह भी ने'मतें हैं (تفسیر دُرِّ مَنثور ج۸ ص۶۱۳) ﴿2﴾ ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने मज़्कूरा आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया : जिस ने गन्दुम (या'नी कनक, गेहूं) की रोटी खाई और फ़ुरात का ठन्डा पानी पिया नीज़ रहने के लिये मकान भी हो, येह वोह ने'मतें हैं जिन के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होगा (اَیضاً ص۶۱۲) ﴿3﴾ जलीलुल क़द्र ताबेई ह़ज़रते इमाम मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इस आयते मुबारका के बारे में फ़रमाया कि इस से दुन्या की हर लज़्ज़त वाली शै मुराद है। (ایضاً)

सूरतुत्तकासुर की मज़्कूरा आख़िरी आयते मुबारका के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो **अल्लाह** पाक ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाई थीं सिह़्ह़त व फ़राग़ (या'नी ख़ुश ह़ाली) व अम्न व ऐ़श व माल वग़ैरा जिन से दुन्या में लज़्ज़तें उठाते थे, पूछा जाएगा : येह चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं ? इन का क्या शुक्र अदा किया ? और तर्के शुक्र पर अ़ज़ाब किया जाएगा।

दो अक़्सामे ने'मत और सुवालाते आख़िरत

मश्हूर मुफ़स्सिर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सूरए तकासुर की मज़्कूरा आख़िरी आयत के तह़्त बयान कर्दा तफ़्सीर में येह भी है : कस्बी ने'मत (या'नी अपनी कोशिश से ह़ासिल कर्दा ने'मत मसलन मिठाइयां, लज़ीज़ ग़िज़ाएं, ठन्डे मश्रूबात, उ़म्दा मल्बूसात, दौलत, सल्त़नत वग़ैरा) के बारे में तीन सुवालात होंगे ﴿1﴾ कहां से ह़ासिल की ? ﴿2﴾ कहां ख़र्च की ? ﴿3﴾ इस का क्या शुक्रिया अदा किया ? वह्बी ने'मत (या'नी **अल्लाह** पाक की इ़नायत की हुई वोह ने'मत जिस में बन्दे की अपनी कोशिश का दख़्ल न हो। जैसा कि चांद, सूरज, हाथ, पाउं, आंख, कान वग़ैरा) के बारे में दो सुवालात होंगे : ﴿1﴾ कहां ख़र्च की ? ﴿2﴾ इस का क्या शुक्रिया अदा किया ? (नूरुल इ़रफ़ान स. 966)

आह ! उ़म्दा उ़म्दा ग़िज़ाएं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बड़े ख़ौफ़ की बात है, आज हम उ़म्दा से उ़म्दा तरीन ग़िज़ाओं और ने'मतों के ह़रीस बने हुए हैं मगर क़ब्र में कीड़ों की ग़िज़ा बनने और ह़िसाबे आख़िरत में फंसने के अन्देशे को भूले हुए हैं। हमें अच्छे में अच्छा और लज़ीज़ तरीन खाना चाहिये और वोह भी गर्म हो, एक तो "उ़म्दा ग़िज़ा" बज़ाते ख़ुद ने'मत और उस का गर्म होना ने'मत दर ने'मत, सादा चाय से भी गुज़ारा नहीं, दूध पत्ती हो और वोह भी मीठी मीठी और गरमा गर्म हो, यूं हमारी एक चाय भी कई ने'मतों का मज्मूआ़ बन जाती है ! इसी त़रह़ ह़ल्वा पूरी, पिज़्ज़े, पराठे, अन्वाओ़ अक़्साम की मिठाइयां, त़रह़ त़रह़ के ताज़ा फल और ख़ुश्क मेवे (या'नी ड्राई फ्रूट), ख़ुश ज़ाएक़ा फ़ालूदे, ठन्डे मीठे

मज़ेदार शरबत, बादाम पिस्ते वाला शीर ख़ुर्मा, ठन्डी बोतलें (COLD DRINKS), आइसक्रीमें, मख्खन, मलाई, कस्टर्ड, कबाब समोसे, गरमा गर्म पकोड़े, तली हुई मछली, तली हुई चांपें, तन्दूरी रान, चिकन तिक्का, सीख़ कबाब, बर्गर और न जाने क्या क्या हमारा लालची नफ़्स त़लब करता और खाता पीता है। अगर्चे मज़्कूरा तमाम गि़ज़ाएं खाना ह़लाल हैं मगर इन पर और तमाम ने'मतों पर बरोज़े आख़िरत सुवालात किये जाएंगे। काश! हमारा खाऊ पियू नफ़्स क़ाबू में आ जाए। काश! अच्छी अच्छी निय्यतों के न होने की सूरत में फ़क़त़ तफ़रीह़न और मह़ज़ हुसूले लज़्ज़त के लिये खाने पीने की आ़दत से हमारी जान छूट जाए।

माल खाने के शाइक़ीन ग़ौर फ़रमाएं

हम चन्द मिनट की लज़्ज़त की ख़ाति़र कितना बड़ा ख़त़रा मोल ले रहे हैं इस बात को इस रिवायत से समझने की कोशिश कीजिये चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "मिन्हाजुल आ़बिदीन" (504 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 141 पर हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है : "बेशक सकराते मौत की शिद्दत दुन्या की लज़्ज़तों के मुता़बिक़ है।" तो जिस ने ज़ियादा लज़्ज़तें उठाईं उसे नज़्अ़ की तक्लीफ़ भी ज़ियादा होगी। (مِنهاجُ العابدين ص٩٤)

नज़्अ़ की सख़्तियों की झलक

नज़्अ़ की सख़्तियों की झलक मुलाह़ज़ा हो चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती़ शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : मौत दुन्या व आख़ि़रत की हौलनाकियों में सब से ज़ाइद हौलनाक है, येह आरों के चीरने से, क़ैंचियों के काटने से, हांडियों के उबालने से ज़ाइद है। अगर

मुर्दा ज़िन्दा हो कर शदाइदे मौत (या'नी मौत की सख़्तियां) लोगों को बता देता तो उन का ऐ़श और नींद सब कुछ ख़त्म हो जाता। (شَرْحُ الصُّدُور ص ٣٣)

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
जां कनी की तक्लीफ़ें ज़ब्ह से हैं बढ़ कर काश ! मुर्ग़ बन के त़यबा में ज़ब्ह हो गया होता
आह ! कस्रते इ़स्यां हाए ! ख़ौफ़ दोज़ख़ का काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता
शोर उठा येह महश्र में ख़ुल्द में गया अ़त्तार गर न वोह बचाते तो नार में गया होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 256, 258)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ह़िसाबे ने'मत के बारे में लरज़ा ख़ेज़ 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

फ़ानी लज़्ज़तों से अपने आप को बचाने का जज़्बा बढ़ाने और दुन्यवी ने'मतों के सबब होने वाले ह़िसाबे आख़िरत से ख़ुद को डराने के लिये दिल हिला देने वाले 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों : ﴿1﴾ जब क़ियामत का दिन होगा तो **अल्लाह** पाक अपने बन्दों में से एक बन्दे को बुला कर अपने सामने ख़ड़ा कर देगा और उस से उस के जाह व मर्तबे के मुतअ़ल्लिक़ इसी त़रह़ सुवाल करेगा जिस त़रह़ उस के माल के बारे में सुवाल फ़रमाएगा। (معجم اوسط، 1/140، حدیث:4481) ﴿2﴾ बन्दा कोई भी क़दम उठाता है तो क़ियामत में उस से सुवाल होगा कि वोह क़दम किस लिये उठाया था ? (تاریخ دمشق ج٦ ص ٥٤) ﴿3﴾ क़ियामत के दिन सब से पहले बन्दे से येह सुवाल होगा कि क्या मैं ने तेरा जिस्म तन्दुरुस्त नहीं रखा था ? क्या मैं ने तुझे ठन्डे पानी से सैराब न किया था ? (तूने इन के हुक़ूक़ अदा किये या नहीं ?) (المستدرک، 5/191، حدیث:7285) ﴿4﴾ मालिक और मम्लूक (या'नी ग़ुलाम) को और ज़ौज (या'नी शौहर) और ज़ौजा को लाया जाएगा फिर उन से ह़िसाब होगा, यहां तक कि मर्द से कहा

जाएगा तूने फुलां फुलां दिन लज़्ज़त के साथ पानी पिया और शौहर से कहा जाएगा कि फुलां औरत से निकाह के और भी तलब गार थे लेकिन तूने उस का निकाह चाहा तो मैं ने उन सब को छोड़ कर उस का निकाह तेरे साथ कर दिया। (क्या तू ने इन ने'मतों का हक़ अदा किया ?) (مجمع الزوائد،10/633،حدیث:18390) ﴿5﴾ क़ियामत में मोमिन से हर अमल का सुवाल होगा यहां तक कि उस से अपनी आंखों में सुरमा डालने के मुतअ़ल्लिक़ भी सुवाल किया जाएगा। (حليةُ الاولياء ج١٠ ص٣١) ﴿6﴾ बन्दा जो खुत्बा पढ़ता (या'नी वा'ज़ और बयान करता) है इस के बारे में भी उस से सुवाल होगा कि इस से तेरा क्या इरादा था ? (الصمتمع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیا ج٧ص٢٩٤حديث ٥١٤) (मुबल्लिग़ीन व मुक़र्रिरीन ग़ौर फ़रमाएं कि बयान का मक़्सूद नेकी की दा'वत थी या बयान की ता'रीफ़ और वाह वाह की तलब या हुसूले शोहरत या दौलत ?) ﴿7﴾ जो शख़्स किसी शै की जानिब बुलाएगा क़ियामत के दिन उसे उस की दा'वत (या'नी बुलाने) के साथ खड़ा किया जाएगा, ख़्वाह एक ही आदमी को दा'वत क्यूं न दी हो। (ابن ماجه ج١ ص١٣٧ حديث٢٠٨) (इस रिवायत में खुलूस की तरफ़ इशारा है मसलन नेकी की दा'वत महज़ रिज़ाए इलाही के लिये दी थी या कोई और मक़्सद था ! इन्फ़िरादी कोशिश करने वाले मुबल्लिग़ीन भी ग़ौर फ़रमाएं) ﴿8﴾ क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, तुम जिस ने'मत के मुतअ़ल्लिक़ क़ियामत में सुवाल किये जाओगे वोह ठन्डा साया और उ़म्दा खजूर और ठन्डा पानी है। (ترمذی ج٤ ص١٦٣حديث٢٣٧٦) ﴿9﴾ क़ियामत में हर ग़नी व फ़क़ीर (या'नी हर अमीर व ग़रीब) आरज़ू करेगा कि काश ! दुन्या में इस के पास सिर्फ़ कूत होता (ابن ماجه ج٤ ص٤٤٢ حديث٤١٤٠) (कूत या'नी सिर्फ़ इतना खाना होता जिस से ज़िन्दगी बच सके और बस)

माल ज़ियादा वबाल ज़ियादा

﴾1﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मीरह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जितना माल ज़ियादा होगा उतना ह़िसाब ज़ियादा होगा । (البدور السافرة فی امور الآخرة ص ٢٦٤) ﴾2﴿ ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : क़ियामत में एक दिरहम वाले के मुक़ाबले में दो दिरहम वाले का ह़िसाब ज़ियादा सख़्त होगा । (الزهد للامام احمد بن حنبل ص ١٧٠ حديث٧٩٧) ﴾3﴿ जलीलुल क़द्र ताबेई़ सय्यिदुना मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : क़ियामत में सब से सख़्त ह़िसाब तन्दुरुस्त फ़ारिग़ुल बाल (या'नी ख़ुशह़ाल) शख़्स से होगा । (تاريخ مدينه دمشق ج٥٩ ص ٢٧١)

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब
बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स, 171)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : **सदक़ा :** वसीला । **बे पूछे :** बे ह़िसाब । **लजाए :** शरमिन्दा । **लजाना :** शरमिन्दा करना ।

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस शे'र के अन्दर बारगाहे ख़ुदा वन्दी में अ़र्ज़ कर रहे हैं : **या अल्लाह** पाक तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शर्मो ह़या का वासित़ा ! मुझे मह़शर में पूछगछ किये बिग़ैर ही बख़्श दे, मैं तो अपने गुनाहों पर पहले ही शरमिन्दा हूं मेरे आ'माल का ह़िसाब ले कर मज़ीद शरमिन्दा न फ़रमा ।

इम्तिह़ां के कहां क़ाबिल हूं मैं प्यारे अल्लाह
बे सबब बख़्श दे मौला तेरा क्या जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 126)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

12 साल तक ह़िसाबो किताब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आख़िरत के ह़िसाब का मुआ़मला निहायत संगीन है । इ़ब्रत के लिये एक ह़िकायत पेश की जाती है, सुनिये और ख़ूब कुढ़िये चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : नाज़िमे निज़ामे उम्मत, साह़िबे ख़ौफ़ो ख़शिय्यत, सरदारे साकिनाने जन्नत अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के विसाले पुर मलाल के बा'द मुझे आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के उख़्रवी मुआ़मलात जानने की शदीद ख़्वाहिश थी । एक दिन मैं ने ख़्वाब में एक महल देखा तो पूछा : येह किस का है ? फ़िरिश्ते ने बताया : "ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ का ।" इतने में वज़ीरे हुज़ूरे अन्वर, साकिनाने जन्नत के सरवर, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ उस महल से बाहर इस ह़ाल में तशरीफ़ लाए कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ पर एक चादर थी गोया अभी अभी ग़ुस्ल फ़रमाया है । मैं ने अ़र्ज़ की : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : अच्छा मुआ़मला फ़रमाया । फिर मुझ से पूछने लगे : मुझे तुम से जुदा हुए कितना अ़र्सा गुज़रा है ? मैं ने अ़र्ज़ की : 12 साल । फ़रमाने लगे : अब जा कर ह़िसाबो किताब से फ़ारिग हुवा हूं । (تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر 44/483)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म
देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का

(ज़ौक़े ना'त, स. 18)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सह़ाबा में सब से मालदार सह़ाबी के ह़िसाबे क़ियामत का अह़वाल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अद्लो इन्साफ़ के पैकर, परहेज़ गारों के अफ़्सर, मुत्तक़ियों के रहबर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ की येह ह़िकायत हमें बहुत कुछ समझा रही है। अ़शरए मुबश्शरा के रोशन सितारे ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ जो कि सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان में सब से ज़ियादा मालदार थे आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ का सारा ही माल यक़ीनी तौ़र पर ह़लाल था और कस्रते माल ग़फ़्लत शिआ़री के बजाए आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ के लिये ख़शिय्यते इलाही का सबब बन गई थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ के ह़िसाबे क़ियामत की ह़िकायत भी सरापा इ़ब्रत है, मुलाह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे एक बार सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के पास तशरीफ़ ला कर फ़रमाया : ''ऐ अस्ह़ाबे मुह़म्मद ! आज रात **अल्लाह** पाक ने जन्नत में तुम्हारे मकान और मन्ज़िलें नीज़ मेरे मकान से किस का कितना दूर मकान है सब मुझे दिखाए।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जलीलुल क़द्र अस्ह़ाबे किराम की मन्ज़िलें फ़र्दन फ़र्दन बयान करने के बा'द ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से फ़रमाया : ''ऐ अ़ब्दुर्रह़मान (मैं ने देखा) कि तुम मुझ से बहुत दूर हो गए यहां तक कि मुझे तुम्हारी हलाकत का ख़दशा होने लगा फिर कुछ देर बा'द तुम पसीने में शराबोर मुझ तक पहुंचे तो मेरे पूछने पर तुम ने बताया : ''मुझे ह़िसाब के लिये रोक लेने के बा'द मुझ से पूछगछ शुरूअ़ हो गई कि माल कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया ? रावी कहते हैं, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ येह सुन कर रो पड़े और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह सो ऊंट जो आज ही रात मिस्र से माले तिजारत समेत आए हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को गवाह बना कर इन्हें

मदीनए पाक के ग़रीबों और यतीमों पर सदक़ा करता हूं। (تاریخ دِمشق ج۳۵ص۲۶۶) ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : मुझे अन्देशा है कि कस्रते माल कहीं (आख़िरत में) मुझे हलाकत में न डाल दे ! उन्हों ने फ़रमाया : अपना माल राहे ख़ुदा में ख़र्च करते रहा करो ।

(استیعاب فی معرفة الاصحاب ج۲ ص۳۸۹)

मालदारों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनी क़त्ई ह़लाल माल रखने वाले अपना माले ह़लाल दोनों हाथों से राहे ख़ुदा में लुटाने वाले के ह़िसाबे क़ियामत की इस लरज़ा ख़ेज़ ह़िकायत पर नज़र रखते हुए मालदारों को ग़ौर करना और क़ियामत के होशरुबा अहवाल (या'नी दह्शतों और घबराहटों) से डरना चाहिये और जो लोग मह्ज़ दुन्यवी ह़िर्स के सबब माल इकठ्ठा किये जाते, इस के लिये दर बदर भटकते फिरते और माल बढ़ाने के निज़ाम को बेहतर से बेहतरीन बनाते चले जाते हैं उन्हें अपनी इस रविश पर नज़रे सानी कर लेनी चाहिये और जो सूरत दुन्या व आख़िरत दोनों के लिये बेहतर हो वोह इख़्तियार करनी चाहिये ।

मालो दौलत के मुतअ़ल्लिक़ अच्छी अच्छी निय्यतें

ह़लाल माल जम्अ़ करना फ़ी नफ़्सिही मुबाह़ है (या'नी न इस में सवाब है न गुनाह) । अगर कोई इल्मे निय्यत रखने वाला इस की अच्छी अच्छी निय्यतें कर ले तो ख़्वाह माले ह़लाल के ज़रीए अरबों पती बन जाए उस का माल उस की आख़िरत के लिये नुक़्सान देह नहीं । मगर याद रहे ! रस्मी तौ़र पर सिर्फ़ ज़बान से निय्यत के अल्फ़ाज़ अदा कर लेने को निय्यत नहीं कहते, निय्यत दिल के उभार और पक्के इरादे का नाम है

या'नी जो निय्यत कर रहा है वोह उस के दिल में इस त़रह़ मौजूद हो कि मैं ने 100 फ़ी सदी ऐसा करना ही करना है। मालो दौलत के बारे में निय्यत की रग़बत दिलाते हुए ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : माल लेने, छोड़ने, ख़र्च करने और रोकने में निय्यत सह़ीह़ होनी चाहिये। माल इस लिये ह़ासिल करे कि इबादत पर मदद ह़ासिल हो और माल छोड़ना हो तो ज़ोह्द (या'नी दुन्या से बे रग़बती) की निय्यत से और उसे ह़क़ीर समझते हुए छोड़े। जब येह त़रीक़ा इख़्तियार करेगा तो माल का मौजूद होना उसे नुक़्सान नहीं पहुंचाएगा, इसी लिये अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : "अगर कोई शख़्स तमाम रूए ज़मीन का माल ह़ासिल करे और उस का इरादा रिज़ाए इलाही का ह़ुसूल हो तो वोह ज़ाहिद (या'नी दुन्या से बे रग़बत) है और अगर तमाम माल छोड़ दे लेकिन रिज़ाए ख़ुदा वन्दी मक़्सूद न हो तो वोह ज़ाहिद नहीं है।" पस आप की तमाम ह़रकात व सकनात **अल्लाह** पाक के लिये हों और इबादत से बाहर न हों या इबादत पर मददगार हों। जो चीज़ें इबादत से ज़ियादा दूर हैं वोह खाना खाना और क़ज़ाए ह़ाजत (या'नी इस्तिन्जा) है लेकिन येह दोनों भी इबादत पर मददगार हैं जब इन से आप का मक़्सूद येह होगा या'नी इबादत पर क़ुव्वत और दिल जम्ई ह़ासिल करने की निय्यत होगी तो येह काम भी आप के ह़क़ में इबादत होंगे। इसी त़रह़ जो चीज़ें आप की ह़िफ़ाज़त करती हैं मसलन क़मीस, इज़ार (या'नी पाजामा), बिछोना और बरतन वग़ैरा तो इन सब में भी अच्छी निय्यत होनी चाहिये क्यूं कि दीन के सिल्सिले में इन तमाम चीज़ों की ज़रूरत होती है और जो कुछ ज़रूरत से ज़ाइद हो उस से

बन्दगाने ख़ुदा को नफ़्अ़ पहुंचाने की निय्यत होनी चाहिये और जब किसी शख़्स को उस की ज़रूरत हो तो इन्कार न करे जो शख़्स इस त़रह़ का अ़मल करेगा उस ने माल के सांप (यहां माल को "सांप" से तश्बीह दी गई है) से उस का (मुफ़ीद ह़िस्सा या'नी) जौहर और तिरयाक़ (ज़ह़र मोहरा या'नी ज़ह़र की दवा जो ज़ह़र का उतार करती है) भी ले लिया और (ख़ुद सांप के) ज़ह़र से मह़फ़ूज़ (भी) रहा, ऐसे आदमी को माल की कसरत नुक़्सान नहीं पहुंचाती लेकिन येह काम वोही शख़्स कर सकता है जिस के क़दम दीन में मज़्बूत़ हों और उस के पास कसीर इ़ल्मे दीन हो। इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه आगे चल कर मालो दौलत से बच कर रहने की तल्क़ीन करते हुए फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ नाबीना का बीना (या'नी आंख वाले) की त़रह़ पहाड़ों की चोटियों और दरियाओं के कनारों तक पहुंचना और कांटेदार रास्तों से गुज़रना मुम्किन नहीं इसी त़रह़ आ़म आदमी का मालो दौलत की आफ़तों से बचना भी ना मुम्किन है। (اِحیاءُ العلوم ج۳ ص ۳۲۰) मालो दौलत परहेज़ गार और ब कसरत इ़ल्मे दीन रखने वाला ही चाहे तो ले सकता है कि शरीअ़त के मुत़ाबिक़ इसे ह़ासिल और शरीअ़त ही के मुत़ाबिक़ इसे इस्ति'माल कर सकता है और माल की आफ़तों से ख़ुद को बचा सकता है।

ज़ख़्मी दिल वाले बुज़ुर्ग

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه रो रहे थे, लोग उन के गिर्द इकठ्ठे हो गए और तर्स खाते हुए कहने लगे : **अल्लाह** पाक आप पर रह़्म फ़रमाए, क्या मस्अला हो गया है, क्यूं रो रहे हैं ? फ़रमाया : मेरे दिल में एक ज़ख़्म है जिसे ख़ाइफ़ीन

(या'नी **अल्लाह** पाक से डरने वाले लोग) अपने दिलों में पाते हैं, लोगों ने अ़र्ज़ की : वोह ज़ख़्म किस त़रह़ का होता है ? फ़रमाया : उस पेशी के ख़ौफ़ का ज़ख़्म जब बरोज़े क़ियामत बारगाहे इलाही में ह़िसाब किताब के लिये पेश होने के लिये ए'लान होगा। (اِحیاء العلوم ج ٤ ص ٢٣٠)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ऐब दुन्या में तू ने छुपाए ह़श्र में भी न अब आंच आए
आह ! नामा मेरा खुल रहा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 134)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

नफ़रत मह़ब्बत में बदल गई

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूमात बढ़ाने, दुरुस्त इस्लामी अ़क़ाइद ज़ेह्न में बिठाने, शैत़ान को दूर भगाने, ईमानिय्यात के बारे में आने वाले वसाविस से जान छुड़ाने, ग़फ़्लत की नींद उड़ाने, रूह़ानी कैफ़ो सुरूर पाने और अपने आप को बा किरदार मुसल्मान बनाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये और अपने इस मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के ह़ुसूल की ख़ातिर अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये फ़िक्र मन्द रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, नेक आ़'माल के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये रोज़ाना अपने आ़'माल का जाएज़ा ले कर के "नेक आ़'माल" का रिसाला पुर कर के हर महीने की पहली तारीख़ को अपने यहां के शौ'बे इस्लाह़े

आ'माल के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक मदनी बहार सुनाऊं एक इस्लामी भाई ने ग़फ़्लतों की वादी में गुज़रे हुए अपने लम्ह़ाते ज़िन्दगी के बारे में कुछ इस त़रह़ बयान किया : मेरी ज़िन्दगी भरपूर ग़फ़्लत में गुज़र रही थी, मेरे उजड़े हुए गुलज़ार में रुश्दो हिदायत की बादे बहार दा'वते इस्लामी से वाबस्ता एक आ़शिक़े रसूल की बा बरकत सोह़बत की बदौलत चली। उन की इन्फ़िरादी कोशिश ने मुझे दा'वते इस्लामी के क़रीब तर कर दिया और मैं दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। जब मैं पहली बार हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हुवा तो मैं ने अव्वल ता आख़िर बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल की, येह सब कुछ मुझे बहुत अच्छा लगा लेकिन जब इज्तिमाअ़ में शरीक इस्लामी भाई बयक आवाज़ दीवाना वार ज़िक्रुल्लाह में मसरूफ़ हुए तो मुझे बे इख़्तियार हंसी आ गई कि येह लोग क्या पागलों की त़रह़ शुरूअ़ हो गए हैं ! (اَلْعِیَاذُبِاللّٰہ) मैं इसी त़रह़ के अह़मक़ाना वस्वसों में मगन था कि यकायक रूह़ानिय्यत का एक ऐसा झोंका आया कि मैं ख़ुद बख़ुद ज़िक्रुल्लाह में लग गया और ऐसा मस्त हुवा कि अपने गिर्दो पेश की ख़बर ही न रही, दिल पर अ़जीब कैफ़ो सुरूर त़ारी हो गया, اَلْحَمْدُلِلّٰہ इस ज़िक्र व दुआ़ की बरकत से मेरी त़बीअ़त में सन्जीदगी पैदा हो गई और साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर के मैं सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न हो गया। मैं ने चेहरे पर दाढ़ी मुबारक और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज सजा लिया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ रमज़ानुल मुबारक में इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की बरकतें ह़ासिल करने की सआ़दत भी

मुयस्सर आई, अब मेरे वालिदे मोह़तरम ने भी दाढ़ी शरीफ़ सजा ली है और तमाम घर वाले सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो चुके हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰه ता दमे तह़रीर मैं नेक आ़'माल के ख़ादिम (ज़िम्मेदार) की ह़ैसिय्यत से दीनी काम करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं।

इसी माह़ोल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो अंधेरा ही अंधेरा था उजाला कर दिया देखो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़रमाने ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

अल्लाह पाक तुम्हें कोई ने'मत अ़त़ा फ़रमाए और तुम्हें इस का बाक़ी रहना पसन्द आए तो कसरत से **अल्लाह** पाक की ह़म्द और शुक्र अदा करो, अगर तुम्हारे रिज़्क़ में कमी आ जाए तो कसरत से इस्तिग़फ़ार करो और अगर ह़ुक्मरान या किसी की त़रफ़ से तुम पर मुसीबत आ पड़े तो लाह़ौल शरीफ़ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه कसरत से पढ़ो क्यूं कि लाह़ौल शरीफ़ कुशादगी (या'नी फ़राख़ी) की कुन्जी और जन्नत का ख़ज़ाना है। (حلیۃ الاولیاء، 3/225، رقم:3783 ماخوذاً)

फ़ेहरिस

नेकी की दा'वत देना ख़ामोश रहने से बेहतर है..1
क़ब्र की रोशनी का सामान.....2
मुबल्लिग़ीन की क़ब्रें जगमगाएंगी.....2
ज़ुन्नार किसे कहते हैं.....4
ख़लीफ़ा सुलैमान रो पड़ा.....5
मा तह़तों के बारे में पूछा जाएगा.....5
इक़्तिदार मिलने पर रोना.....6
अंगूर के ह़िसाबे आख़िरत का डर.....8
दो अक़्सामे ने'मत और सुवालाते आख़िरत..10
माल खाने के शाइक़ीन ग़ौर फ़रमाएं.....11
नज़्अ़ की सख़्तियों की झलक.....11
माल ज़ियादा वबाल ज़ियादा.....14
सह़ाबा में सब से मालदार सह़ाबी के ह़िसाबे क़ियामत का अह़वाल.....16
मालो दौलत के मुतअ़ल्लिक़ अच्छी अच्छी निय्यतें.....17
ज़ख़्मी दिल वाले बुज़ुर्ग.....19
नफ़रत मह़ब्बत में बदल गई.....20

फ़रमाने आख़िरी नबी صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

“जि़यादा माल जम्अ़ करने वाले कि़यामत के दिन कम नेकियों वाले होंगे मगर जिसे **अल्लाह** पाक ने माल अ़ता फ़रमाया और वोह उसे अपने दाएं, बाएं, आगे और पीछे (नेकी के कामों में) ख़र्च करे और उस के ज़रीए अच्छे (या'नी नेकी के) काम करे।”

(بخاری،4/221،حدیث:6443)